

सुस्वागतम्

रस के अंग

प्रस्तुति

डॉ.कामायनी गजानन सुर्वे
प्राध्यापक,
हिंदी विभाग,
महात्मा फुले महाविद्यालय,पिंपरी,पुणे

(च)

रस

➡ रस का अर्थ है - आनंद

➡ 'नाट्यशास्त्र' ग्रंथ में भरतमुनि ने रस का विवेचन किया है।

(छठे और सातवें अध्यायों में)

➡ भारत का रससूत्र :

''तत्र विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः।''

➡ (विभाव, अनुभाव और संचारी भावों का स्थायी भावों के साथ संयोग होकर रस की निष्पत्ति होती है।)

रस की परिभाषा

"काव्य पढने या नाटक देखने से सहृदय को जो आनंद प्राप्त होता है, उसे रस कहते हैं।"

"आस्वाद्यते इति रसः।"

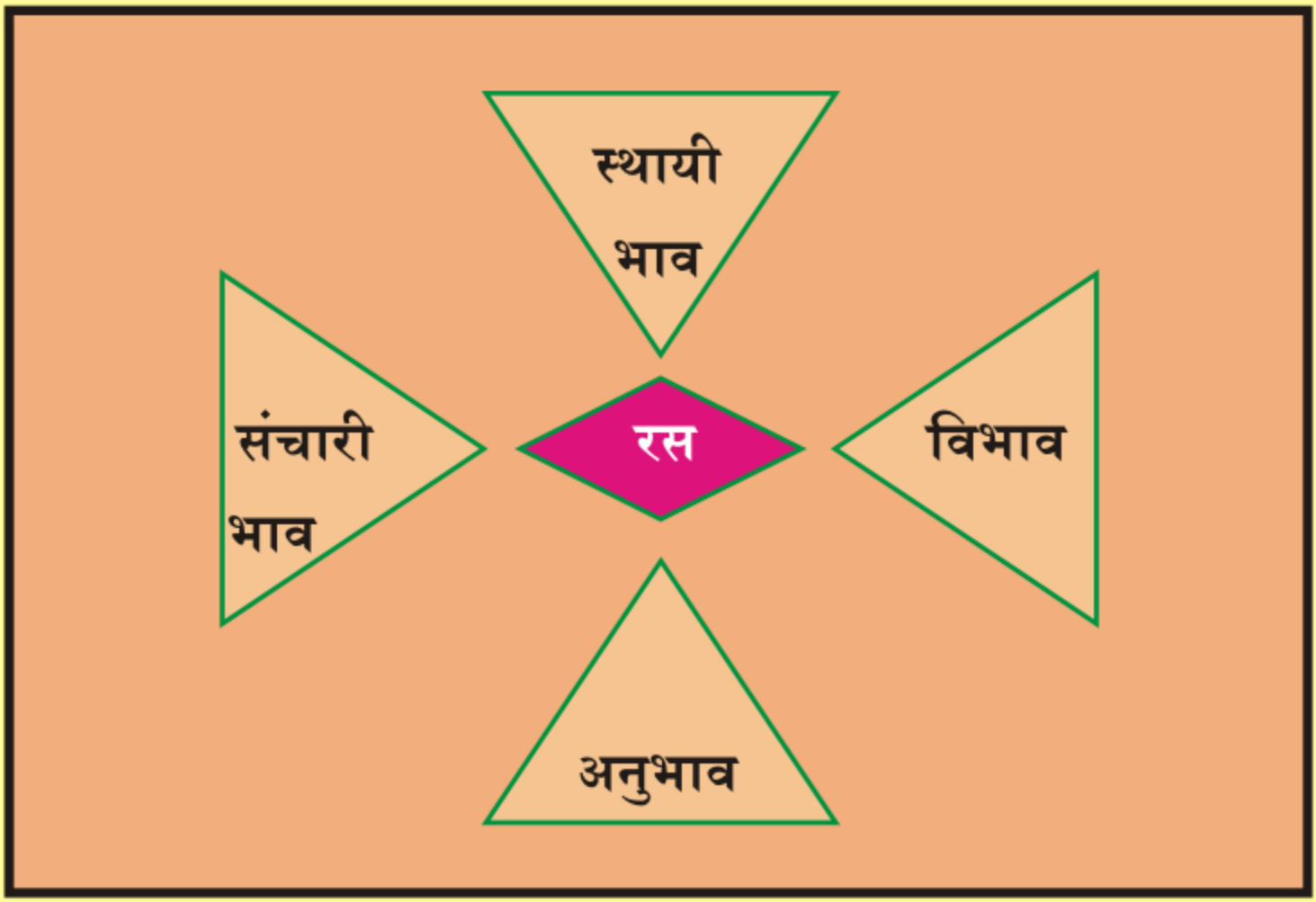
अर्थात

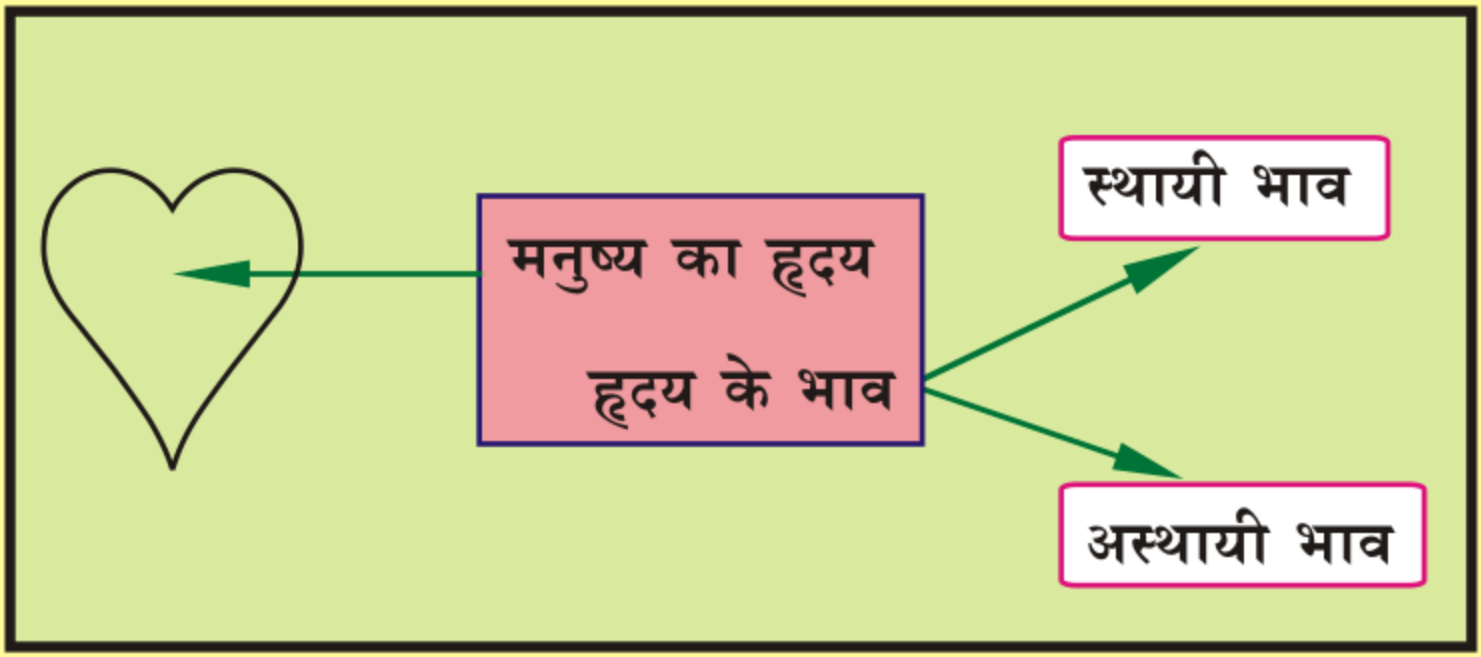
रस आस्वाद स्वरूप है और उसका आस्वादन सहृदय ही कर सकते हैं।

रस की विशेषताएँ

- आस्वाद्यता
- सत्वोद्रेक की स्थिति में उत्पत्ति
- अखंडता
- स्वप्रकाशरुपता
- वेद्यांतरस्पर्शशून्यता
- चिन्मयस्वरुपता
- ब्रह्मास्वादसहोदरता

रस के अंग

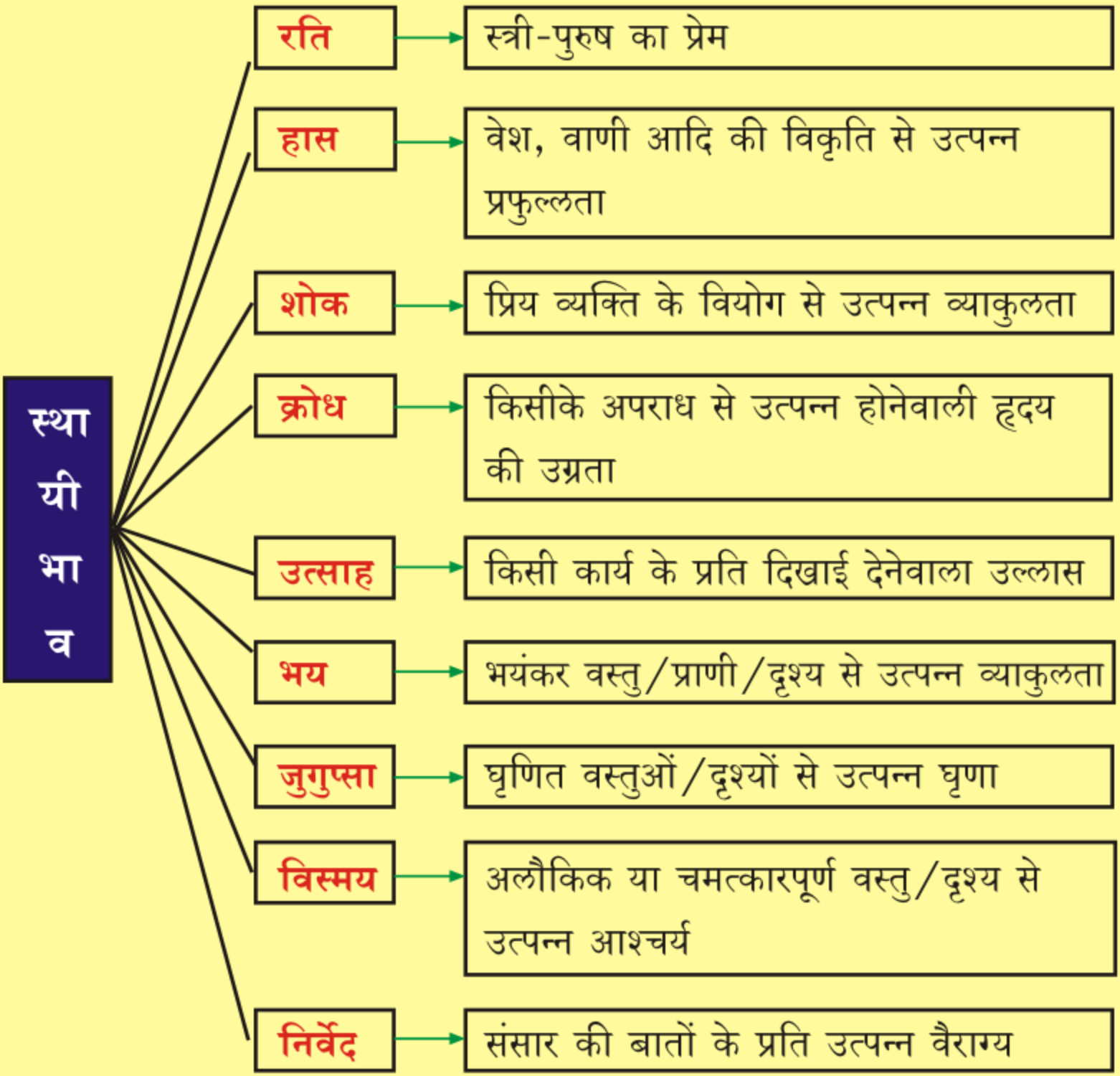


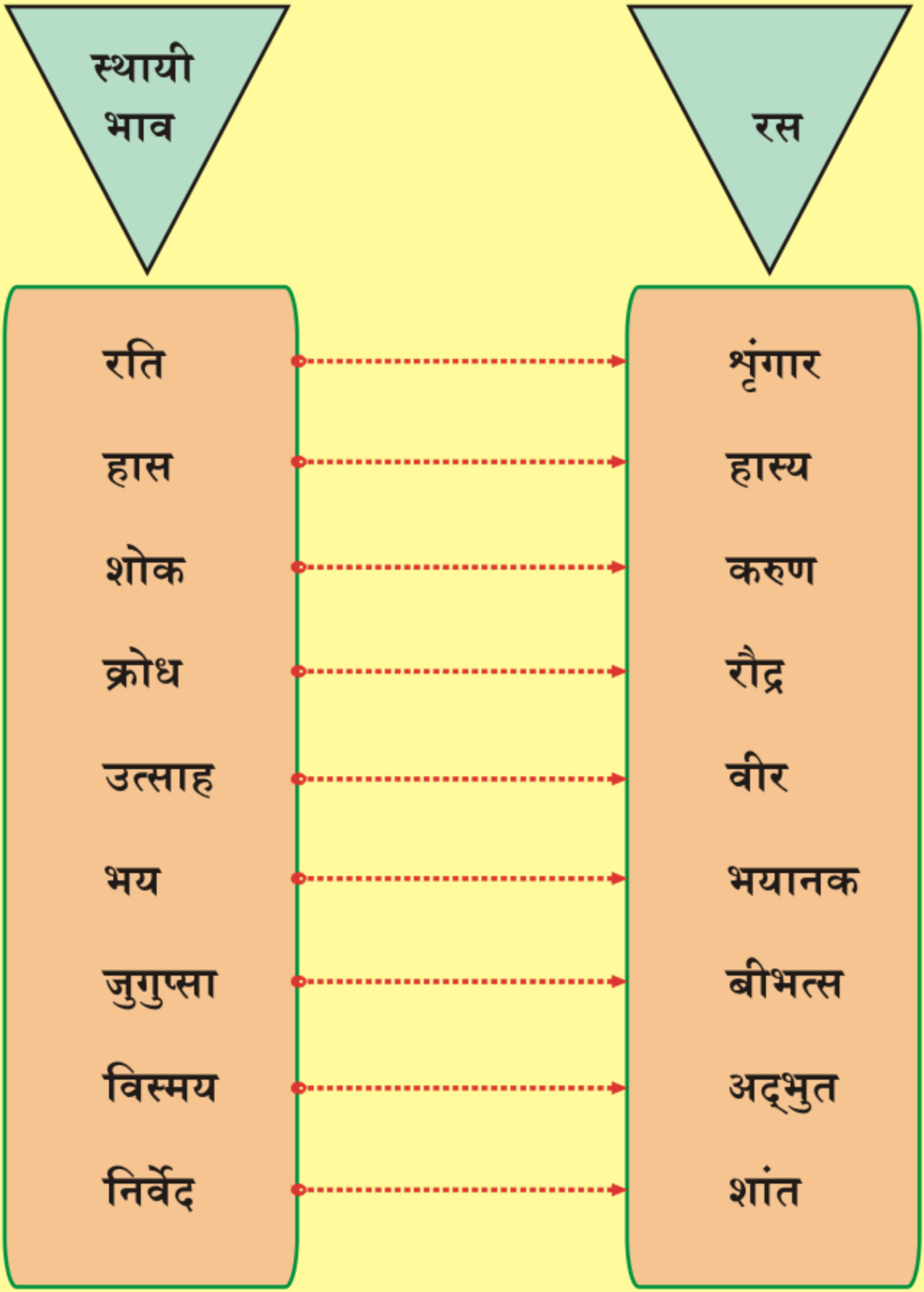


⇨ स्थायी भाव

चित्त में स्थिर रूप से रहने वाले भावों को स्थायी भाव कहा जाता है।

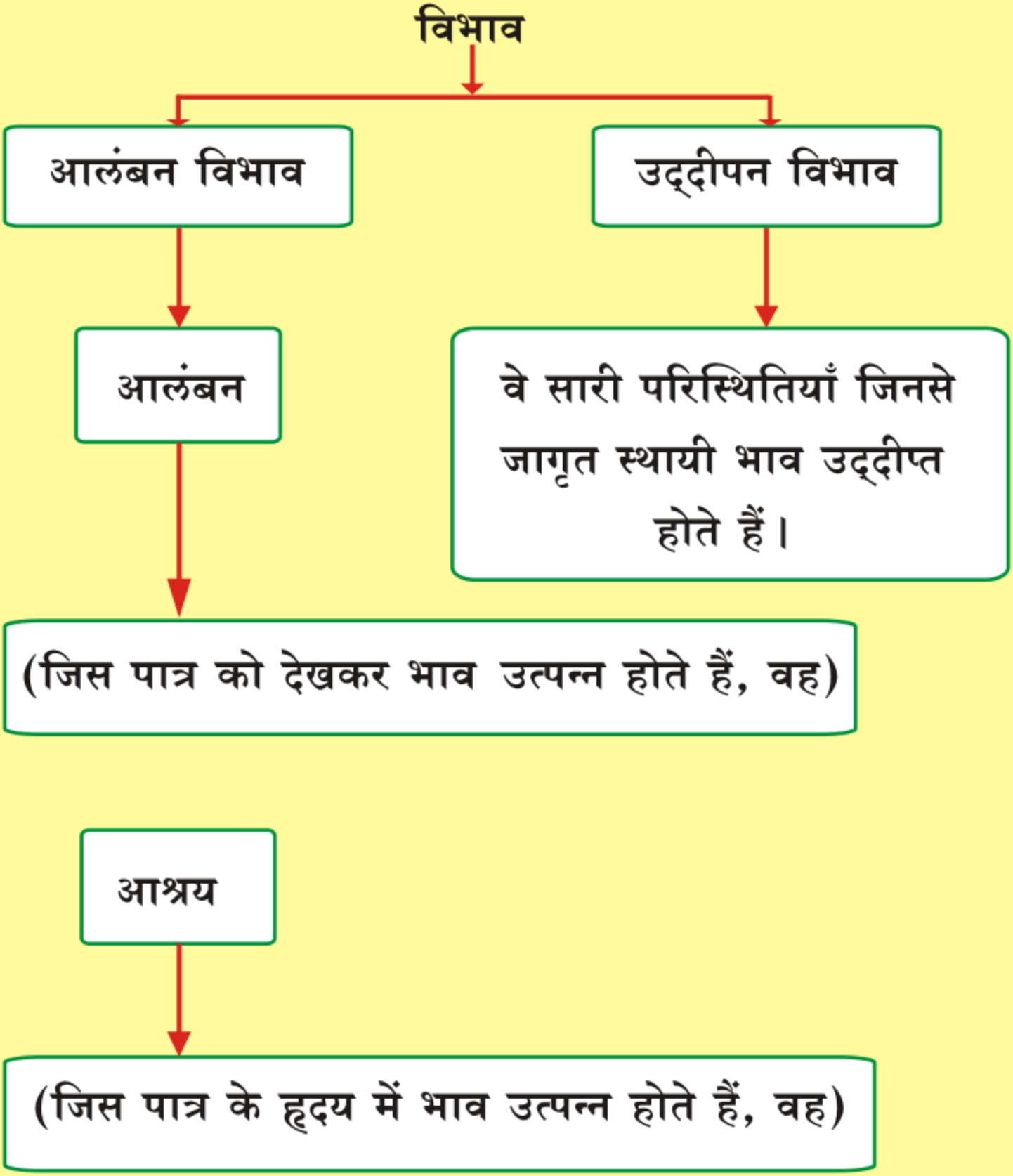
सामान्यत: स्थायी भावों की संख्या नौ है।




स्थायी भाव
रस
रति
हास
शोक
क्रोध
उत्साह
भय
जुगुप्सा
विस्मय
निर्वेद
शृंगार
हास्य
करुण
रौद्र
वीर
भयानक
बीभत्स
अद्‌भुत
शांत

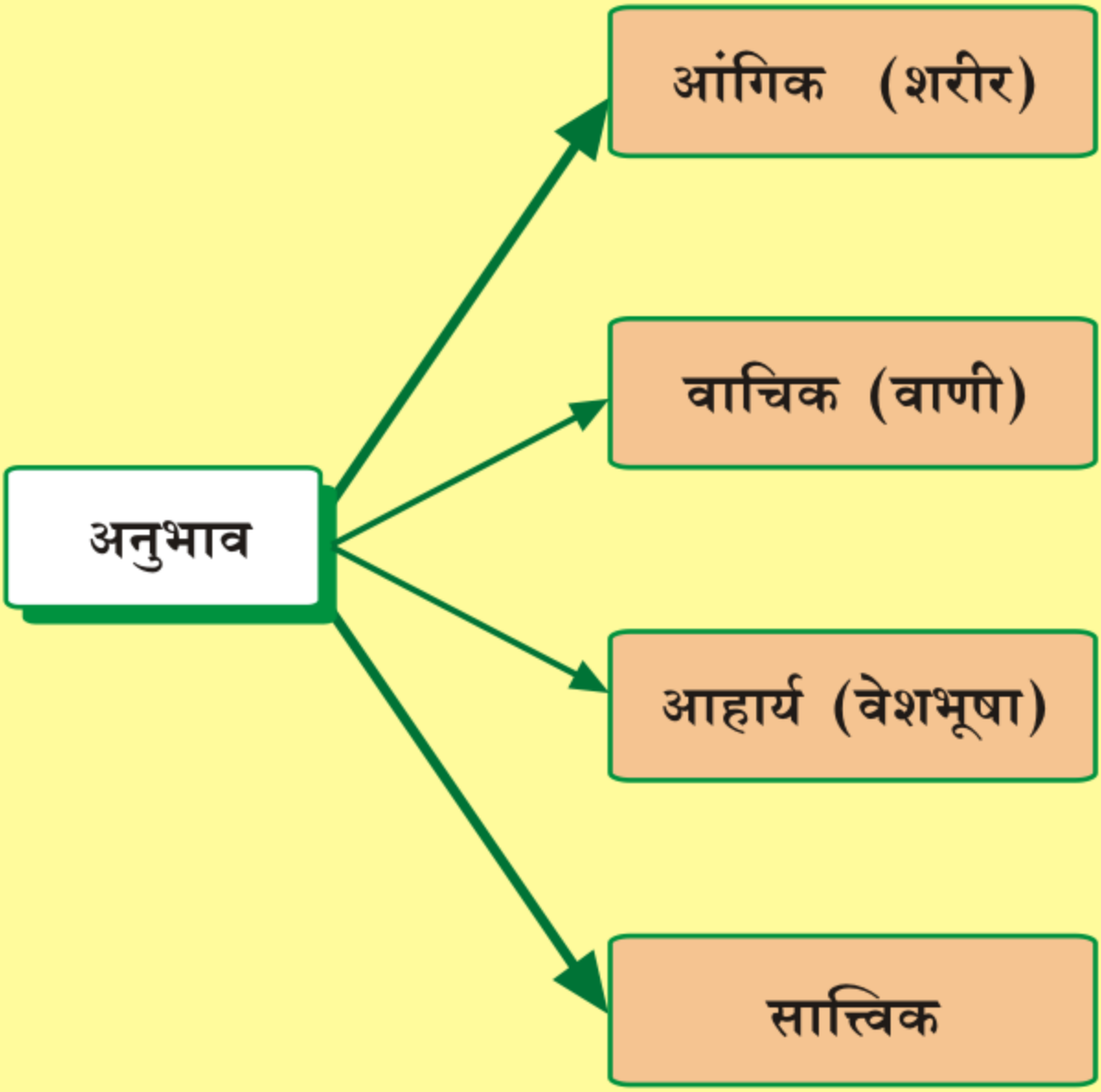
विभाव

रति आदि स्थायी भावों के उद्‌बोधक और उद्‌दीपक कारण विभाव कहलाते हैं।



अनुभाव

रति आदि स्थायी भावों को अभिव्यक्त करने वाली आश्रय की शारीरिक चेष्टाएँ अनुभाव कहलाती हैं।



अनुभाव

सात्विक

स्तंभ	शरीर की गति रूकना
स्वेद	शरीर पर पसीना आना
रोमांच	शरीर पर रोंगटे खड़े होना
कंप	शरीर में कंपन
स्वरभंग	ठीक तरह से बोला न जाना
वैवर्ण्य	चेहरे की कांति फीकी पड़ना
अश्रु	आनंद अथवा दु:खातिरेक से आँखों में आँसू आना
प्रलय	विरह, शोक या भय के कारण मूर्च्छित होना

संचारी / व्यभिचारी भाव

अस्थिर मनोविकार अथवा चित्तवृत्तियाँ संचारी भाव कहलाती हैं। _इनकी संख्या 33 है।

1) हर्ष
2) विषाद
3) त्रास
4) व्रीडा (लज्जा)
5) ग्लानि
6) चिंता
7) शंका
8) असूया
9) अमर्ष(विरोधी का अपकार करने की अक्षमता से उत्पन्न दु:ख)
10) मोह
11) गर्व
12) उत्सुकता
13) उग्रता (निर्दयता)
14) चपलता (चित्त की अस्थिरता)
15) दीनता
16) जड़ता
17) आवेग (घबराहट अथवा उत्तेजित होना)
18) निर्वेद (अपने को कोसना या धिक्कारना)
19) धृति (इच्छाओं की पूर्ति, चित्त की चंचलता का अभाव)
20) मति (तत्व - निद्धार्रण, तथ्य का निर्णय)
21) विबोध (चैतन्य लाभ)
22) वितर्क (विचार)
23) श्रम
24) आलस्य
25) निद्रा
26) स्वप्न
27) स्मृति
28) मद
29) उन्माद (चित्त-विभ्रम)
30) अवहित्था (हर्ष आदि भावों का गोपन / छिपाना)
31) अपस्मार (मूर्च्छा)
32) व्याधि (रोग)
33) मरण (प्राणत्याग)

रस के भेद

रस	देवता	वर्ण	स्थायी भाव	आलंबन विभाव	उद्दीपन विभाग	अनुभाव	संचारी भाव
1. शृंगार 	विष्णु	श्याम	रति	नायक-नायिका	नायक-नायिका की परस्पर प्रेमसूचक चेष्टाएँ, वसंत ऋतु, चाँदनी रात, नदी का किनारा आदि	नेत्रकटाक्ष, आलिंगन, मुस्कुराना, एक-दूसरे की ओर प्रेमपूर्वक देखना, स्वेद,रोमांच आदि	स्वरभंग, हर्ष, लज्जा, उत्सुकता, गर्व आदि
2. वीर 	महेंद्र	सोने के समान गौर	उत्साह	शत्रु	शत्रु की पराजय अस्त्र-शस्त्र का प्रयोग, रणवाद्य, उत्साह बढ़ाने वाली वस्तु आदि	गर्वोक्ति, आँखों की लाली, रोमांच, शस्त्र संचालन आदि	गर्व, उग्रता, हर्ष आदि
3. करुण 	यम	कपोतवत	शोक	जिसके लिए शोक हो वह व्यक्ति	शोच्य व्यक्ति से संबंधित वस्तुओं को देखना तथा उसके गुणों को सुनना, मृत व्यक्ति का दाह संस्कार, लोगों का रोना आदि	रोना, भाग्य को कोसना, छाती पीटना आदि	विषाद, चिंता, स्मृति, ग्लानि, जड़ता आदि

रस	देवता	वर्ण	स्थायी भाव	आलंबन विभाव	उद्दीपन विभाग	अनुभाव	संचारी भाव
4.अद्भुत 	ब्रह्मा	पीत	विस्मय या आश्चर्य	अलौकिक वस्तु/ कार्य	अलौकिक वस्तु की विचित्रता	आँखें फाड़कर देखना, घबराहट, रोमांच	हर्ष, मोह, जड़ता, उत्सुकता, चिंता आदि
5. हास्य 	प्रमथ	श्वेत	हास	जिसे देखकर या जिसके बारे में सुनकर हँसी आए वह व्यक्ति अथवा वस्तु	हँसी उत्पन्न करने वाली बातें या चेष्टाएँ	चेहरा खिलना, दाँत दिखाई देना आदि	हर्ष, उत्सुकता, चपलता, श्रम आदि
6. रौद्र 	रुद्र	लाल	क्रोध	जिस पर क्रोध हो वह व्यक्ति	जिस पर क्रोध किया जा रहा है, उस व्यक्ति का अपराध, अपमान, कठोर वचन आदि	आँखें लाल होना, दाँत पीसना, पैर पटकना,शत्रु को ललकारना आदि	गर्व, उग्रता आदि
7.बीभत्स 	महाकाल	नील	जुगुप्सा या घृणा	ऐसी वस्तु जिससे घृणा उत्पन्न हो, दुर्गंध, गंदी चीजें आदि	कीडों का बिलबिलाना, पशु-पंछियों का मांस नोंचना आदि	नाक-भौंह सिकुड़ना	विषाद, आवेग, त्रास, व्याधि आदि

रस	देवता	वर्ण	स्थायी भाव	आलंबन विभाव	उद्दीपन विभाग	अनुभाव	संचारी भाव
8.भयानक	काल	कृष्ण	भय	जिससे भय हो, जैसे कोई हिंसक प्राणी या भयंकर वस्तु	आलंबन की चेष्टाएँ, स्थान की निर्जनता, विचित्र ध्वनि आदि	घबराकर भागना, स्वेद, कंप, चीखना-चिल्लाना आदि	शंका, चिंता, मोह, दीनता आदि
9. शांत 	विष्णु	कुंद	निर्वेद	संसार की असारता का ज्ञान, परमात्म चिंतन	आश्रम, तीर्थ, सत्संग, शास्त्र-चिंतन	सांसारिक प्रपंच की निंदा, रोमांच आदि	हर्ष, मति, स्मृति आदि

आभारी हैं।